01.01.2015

एक ब्राह्मण आत्मा की सागर बाप से रूहरिहान

पहली स्मृति

मैं आत्मा हूँ। मैं इस धरा को प्रकाशमय करने के लिये स्वीट लाइट के होम से अवतरित हुई हूँ।

मैं कौन हूँ?

मैं एक ब्राह्मण आत्मा हूँ। मेरा जन्म ब्रह्मा मुख कमल से हुआ है। ऐसा संकल्प करते ही मेरे मन में स्नेह की लहरें फ़ैल रही हैं।

मैं किसकी हूँ?

आत्मा की बाबा से रूहरिहान:

मीठे बाबा - गुड मॉर्निंग। बाबा! मुझे आपसे अलौकिक वर्सा प्राप्त हो गया है। इस ब्राह्मण जीवन में मेरी तो बस एक ही आस है कि मैं आप सागर में समाकर सागर समान बन जाऊं।

बाबा की आत्मा से रूहरिहान:

मीठे बच्चे! जागो! मेरे साथ बैठो। जैसे जैसे ज्ञान सूर्य की लाइट की चमक तेज होती जाएगी, वैसे वैसे तुम्हारे अन्दर स्नेह की लहरें पैदा होंगी, जिसे तुम अनुभव करोगे। अमृतवेले से ही यह कार्य ज्ञान सूर्य ज्ञान मुरली के द्वारा प्रारम्भ कर देते हैं। ज्ञान, स्नेह, सुख, शांति व शक्ति की सर्व प्रकार की लहरें इस अमृतवेले के विशेष समय पर ही उत्पन्न होती हैं।

बाबा से प्रेरणाऐ:

अपने मन को सर्व बातों से हटा कर बाबा में लगाऐं। बाबा है साइलेन्स का सागर। इस साइलेन्स में मैं बाबा से प्रेरणायुक्त और पवित्र सेवा के संकल्प ले रही हूँ।

बाबा से वरदान:

सूक्ष्म वतन में मीठे बाबा के सामने मेरा फरिश्ता स्वरूप साफ दिखाई दे रहा है। बहुत प्यार व शक्तिशाली दृष्टि से बाबा मुझे वरदान दे रहे हैं -

*तुम अपने असली स्वरुप को सदा स्मृति में रख दिव्यता की रॉयल्टी से चमकते रहते हो। इस कारण तुम्हारा संग पारस का काम करता है व तुम्हारे संपर्क में आने वाली हर आत्मा गोल्डन लाइट से चमक उठती है।*

बेहद की सूक्ष्म सेवा: (आखिरी के पंद्रह मिनिट - प्रातः ४:४५ से ५:०० बजे तक)

बाबा द्वारा इस वरदान को अपने शुभ संकल्पों द्वारा, वरदाता बन, मैं पूरे विश्व को दान दे रही हूँ। अपनी फरिश्ता ड्रेस पहन कर मैं विश्व भ्रमण करते हुए सर्व आत्माओं को ये वरदान दे रही हूँ।

## रात्रि सोने के पहले

आवाज़ की दुनिया के पार जा कर अपनी स्टेज को स्थिर बनाऐं। चेक करें की आज मैंने दिन भर में किसी बात की अवज्ञा तो नहीं की? अगर हाँ तो बाबा को बताऐं। किसी के मोह या आकर्षण मे बुद्धि तो नहीं फंसी? अपने कर्मो का चार्ट बनाऐं। तीस मिनिट के योग द्वारा किसी भी गलत कर्म के प्रभाव से स्वयं को मुक्त करें। अपने दिल को साफ और हल्का कर के सोऐं।